

ॐ

दी गीता
ऑन
मैनेजमेंट

**THE GITA
ON
MANAGEMENT**

by
DR. M.L. KHURANA

Foreword by
SMT. BHAVNABEN D. CHIKHALIA
Union Minister of State for
Parliamentary Affairs, Tourism and Culture
Government of India

दी गीता
आन मैनेजमैन्ट

**THE GITA
ON MANAGEMENT**

By
DR. M.L, KHURANA
Managing Director National Cooperative
housing Federation of India

Forwarded By
SMT. BHAVNABEN D. CHIKHALIA

Union Minister of State for
Parliamentary Affairs, Tourism and
Culture Government of India

First Edition
August, 2003

Published & Supported by:
M.R. Education Society

प्राकथन

हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों और संस्कृति में मानव जाति के परम कल्याण के लिए अनेकानेक सुझाव दिए गए हैं जिन पर चलकर मनुष्य अपना आध्यात्मिक विकास किस तरह से करे और इस भौतिक संसार में अपना जीवन शुद्ध और सदाचारी किस तरह से बनाएं यह बताया गया है । आज प्रत्येक व्यक्ति अनिश्चितता के वातावरण में जी रहा है । बहुत सुख और सुविधा मिलने के बावजूद मनुष्य को शान्ति नहीं है । आज उसे एक अच्छे मार्ग दर्शन की आवश्यकता है । जिस पर चलकर वह अपने कर्म के प्रति निष्ठावान होखे अपने राष्ट्रधर्म का पालन करे और परिवार में सामंजस्य बनाए रखें । हमारी परम आदरणीय धार्मिक पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता जो कि संसार भर में व्यापक रूप से पढ़ी जाती है, ने जीवन के हर एक पहलू को छुआ है ।

डा० एम. एल. खुराना जो भारतीय राष्ट्रीय सहकारी आवास संघ के कर्मठ और सफल प्रबन्ध निदेशक हैं और कई अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से जुड़े हुए हैं, उन्होंने अपनी अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद समय निकालकर “ गीता आन मैनेजमेंट ” नामक यह पुस्तक लिखी है जो कि एक सराहनीय प्रयास है ।

प्रबन्धन एक सामाजिक और तकनीकी प्रक्रिया है जिसमें संसाधनों और व्यक्तियों के प्रयासों के माध्यम से कार्यों को पूरा किया जाता है । श्रीमद् भगवद्गीता में प्रभावी और कुशल प्रबन्धन के साथ साथ व्यक्तिगत विकास, समुदाय की प्रगति, पारिवारिक मूल्यों पर अधिक महत्व दिया गया है । इस

जीवन के कुठक्षेत्र में अपने को सक्षम, सम्बद्ध और प्रसन्न तथा स्वयं प्रबन्धन करने के अनेक मार्गों पर श्री मद्भगवद् गीता में प्रकाश डाला गया है । इन सभी बातों का वर्णन बहुल सरल भाषा में किया गया है । आप अपनी किसी भी समस्या का समाधान इस पुस्तक से ले सकते हैं ।

मैं डा० एम. एल. खुराना जी को उनके इस आध्यात्मिक कार्य करने पर बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि आने वाले समय में भी वह मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने की अपनी कोशिश जारी रखेंगे ।

अगस्त 2003

(भावना बेन चिख्रालिया)

राज्य मंत्री

संसदीय कार्य

पर्यटन एवं संस्कृति

भारत सरकार

संदेश

एम. आर. शिक्षा संस्था हरियाणा में उच्च शिक्षा के लिए एक अग्रणीय संस्था है । 1997 में इसकी शुरुवात के समय से इसने एक लम्बा सफर तय किया है । इस सफलता के पीछे इस संस्था से जुड़े हर एक व्यक्ति की सशक्त और एकाग्र सूक्ष्मदर्शिता शामिल है । इसका उद्देश्य प्रमुख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों और शिक्षा बोर्डों से सम्बद्ध बेंचमार्क संस्थानों के माध्यम से स भी स्तरों पर कला , विज्ञान , प्राद्योगिकी और प्रबन्ध के सभी क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करना है ।

संस्था की साख आईएसओ 2001-2003 प्रमाणित लैंडमार्क संस्थान तथा प्राद्योगिकी एवं प्रबन्ध ज ीविका संस्थान , फरीदाबाद , अल्पविधि उद्योग अभिविन्यास पाठ्यक्रमों सहित प्रौद्योगिकी संस्था तथा प्रौद्योगिकी के लिए इण्डो केनेडियन स्कूल शामिल है ।

एम. आर. शिक्षा संस्था से सम्बद्ध विद्यार्थियों , संकाय और अन्यो के आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मबोध , आत्मविश्वास, संप्रषण कौशल और रचनात्मक विचारों में वृद्धि लाने के लिए हमने प्राचीन विवके पर आधारित प्रकाशनों की एक श्रृंखला निकालने का निर्णय लिया है ।

प्रबन्ध पर गीता की पहली पुस्तिका की पांडुलिपि लिखने के लिए मैं भारतीय राष्ट्रीय सहकारी आवास संघ के प्रबन्ध निदेशक डा० एम एल खुराना को धन्यवाद देता हूँ । उन्होंने प्रबन्ध से संबंधित श्रीमद् भगवद्गीता की शिक्षाओं को बहुत ही सरल और सुबोध भाषा में अच्छी तरह प्रस्तुत किया है । मुझे आशा है कि आप सभी उनके प्रयासों की प्रशंसा करेंगे ।

मैं इस पुस्तिका हेतु आमुख सुलभ कराने के लिए संसदीय मामले, पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री, भारत सरकार, माननीय श्रीमति भावनाबेन डी. चिखालिया जी भी आभारी हूँ । श्रीमति भावनाबेन जी एक योग्य प्रशासक और बहुत दयालु , निष्कपट , सत्यवादी व्यक्तित्व की धनी हैं । सहकारिता और सामाजिक विकास में उनका योगदान अद्वितीय है । मैं आने वाले समय में उनकी सफलता की कामना करता हूँ ।

डा० ओ पी भल्ला

अध्यक्ष

एम. आर. शिक्षा संस्था

फरीदाबाद

दी गीता ऑन मैनेजमैन्ट

— डा० एम. एल. खुराना

संसार में परिवर्तन बहुत तेजी से हो रहे हैं और हम इस परिवर्तन की ओर तेजी और बड़े आकार की अनिश्चितता के गहरे बादलों के साये में जी रहे हैं । परिवर्तन अनिवार्य है क्योंकि यह हमारे जीवन का आवश्यक तत्त्व है , परन्तु तीव्र परिवर्तन कभी कभी अनेकों विचित्र समस्याएं भी उत्पन्न कर देता है । हम हिंसा, सामाजिक ढांचों के विघटन, नवीन शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं , परिस्थिति विज्ञान की अस्थिरता आदि अस्वीकार्य स्तरों का सामना कर रहे हैं यह हमारे वर्तमान सभ्य समाज के अस्तित्व के लिए खतरा है । इस संबंध में सरकारी नीति में भी परिवर्तन आया है । आजकल सरकार एक पालनहार की भूमिका निभाने सम्बन्धी कार्य कलापों के केन्द्र में नहीं है । भारत सरकार का योजना आयोग जो कभी देश की अर्थव्यवस्था के दीर्घकालीन

विकास के लिए एक प्रमुख केन्द्र माना जाता था आज उस की स्थिति पहले जैसी नहीं है । सरकार धीरे धीरे एक समर्थक अथवा मददगार की भूमिका निभा रही है । योजना और कार्यान्वयन का कार्य व्यक्ति विशेष, सहकारिताओं पर और सशक्त प्राइवेट सेक्टरों को छोड़ दिया जाता है जो केवल लाभ के लिए कार्यरत हैं । बाजार का प्रबन्ध और निर्णय , बाजार शक्तियों द्वारा किया जाता है । अतः बाजार आजकल विकास प्रक्रिया पर राज कर रहा है । आधुनिक प्रबन्ध प्रणाली औश्र तकनीकें दिन प्रतिदिन जटिल होती जा रही हैं , इससे प्रबन्धकों पर अधिक दबाव पड़ रहा है ।

अब हम विभिन्न प्रबन्ध निदेशकों द्वारा प्रबन्ध की दी गई परिभाषा की व्याख्या करते हैं ।

श्री लुंडी के अनुसार , ” प्रबन्धक सैद्धान्तिक रूप से किसी विशिष्ट लक्ष्य के प्रति दूसरों के प्रयासों के विनियोजन, समन्वय, प्रेरणा और नियंत्रण का कार्य है । श्री लारेंस एप्ले के अनुसार प्रबन्ध, अन्य व्यक्तियों के प्रयासों के माध्यम से परिणामों का निष्पादन है । श्री विलियन स्काट के अनुसार प्रबन्ध एक सामाजिक और तकनीकी प्रक्रिया है । जिससे संसाधनों का उपयोग होता है , जो मानव कार्य को प्रभावित करता है और जो एक संगठन के लक्ष्य को निष्पादित करने हेतु परिवर्तन की सुविधा प्रदान करता है ।

सामाजिक विज्ञान के विश्वकोश के अनुसार प्रबन्ध की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है - वह प्रक्रिया जिसके द्वारा दिए गए प्रयोजन का निष्पादन ,

प्रचालन और पर्यवेक्षण किया जाता है । मानव प्रयासों के विभिन्न प्रकारों और श्रेणियों के सम्मिलित परिणामों जिनके द्वारा यह प्रक्रिया प्रभावित होती है , प्रबन्ध के रूप में जानी जाती है । आगे इन व्यक्तियों का समूह, जो किसी उद्यम में इस प्रयास को मिलिकर करते हैं , उद्यम में प्रबन्ध के नाम से जाना जाता है ।

अमेरिकन प्रबन्ध संस्था ने अन्य व्यक्तियों के प्रयासों के माध्यम से कार्य पूरा करने को , प्रबन्ध की परिभाषा दी है ।

अगर हम विभिन्न एक्सपर्ट द्वारा दी गयी उपरलिखित परिभाषाओं को देखते हैं तो हम पाते हैं कि उन्होंने अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए संसाधनों के न्यूनतम स्तर पर प्रयोग तथा मनुष्य को अधिकतम स्तर का उपयोग करने की बात की है । किसी ने भी व्यक्तिगत विकास समुदाय की प्रगति , पारिवारिक मूल्यों तथा स्वयं प्रबन्ध की बात नहीं की । सारांश रूप से हम कह सकते हैं कि प्रबन्ध विशेषज्ञों के अनुसार प्रबन्ध न्यूनतम प्रयासों द्वारा अधिकतम लाभ , समृद्धि तथा प्रसन्नता प्राप्त करने की कला है । इस लाभ और समृद्धि का अधिकांश हिस्सा उद्यमियों के हिस्से में आता है ।

एक समय था जब भारत व्यापार और वाणिज्य में अग्रणी था । यह सब प्राचीन विवेक पर आधारित श्रेष्ठतम प्रबन्ध प्रणाली के आधार पर था । 19205-305 से आरंभ अमेरिकन प्रबन्ध प्रणाली ने

विभिन्न विशेषताओं और विशिष्टताओं का प्रदर्शन किया । यह पूरी तरह अनुबंध पर आधारित था । अमेरिकन उद्यमी जो वरिष्ठ सेना अधिकारी थे और जिनके पास बहुत पैसा था, वह कहा करते थे हमारे पास दिमाग और संसाधन हैं हमें केवल श्रमिकों की आवश्यकता है जो हमारी अपेक्षाओं के अनुसार अपने हाथों से काम कर सकें । जापानी प्रणाली ने श्रमिकों को उनके हाथों व दिमाग के साथ आमंत्रित किया । उन्होंने उनके कार्य और विचारों का आदर किया । प्राचीन भारतीय प्रबन्ध प्रणाली तीन चीजों यथा हाथों, दिमाग और दिल के सम्मिश्रण से बनी थी । भारतीय प्रबन्ध प्रणाली ने श्रमिकों के कार्य, उनके विचारों और उनकी भावनाओं का आदर किया । इसीलिए भारत सफल रहा और उसने जबरदस्त सफलता और गौरव हासिल किया । अब हम देखते हैं कि हमारी धार्मिक पुस्तक श्री मद्भागवतगीता जो संसार भर में व्यापक रूप से पढ़ी जाती है - प्रबन्ध के सम्बन्ध में क्या कहती है ।

मोह के बिना सकारात्मक कार्य (Positive Action Without Attachment)

गीता में लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करना चाहिए क्योंकि कार्य के बगैर वह बेचैनी अनुभव करता है । खाली बैठना भारी लगता है , यह बड़ी सजा के समान है , ऐसे जैसे एकान्त कारावास । कोई भी

व्यक्ति एक पल के लिए भी निष्क्रिय नहीं रह सकता । हर व्यक्ति प्राकृतिक गुणों के कारण ही क्रियाशील रहता है । (3 (5)) , गीता में आगे लिखा है कि कोई भी कार्य हमारे दिमाग, शरीर, इन्द्रियो और बुद्धि से निष्पादित किया जाता है और पांच कारक हैं जो किसी कार्य को निष्पादित करते हैं वह हैं - अहम, शारीरिक और मानसिक क्षमता, अंतर परक (**inbuilt**) मूल्य और बाहरी शक्तियाँ । कर्म करना , काम नकरने से बेहतर है । कर्म को छोड़कर आप अपने शरीर को ठीक ठाक नहीं रख सकते । (3 (8)) , अतः हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि जो कोई भी काम हमें सौंपा जाता है , हमें उस कार्य को बिना किसी इच्छा, मोह अहम, और डर के निष्पादित करना चाहिए । अगर कार्य मोह के साथ निष्पादित होता है तो वह सही कर्म को कुप्रभावित करता है । प्रत्येक व्यक्ति को फल की इच्छा रखे बगैर अपेन ज्ञान और क्षमता के अनुसार श्रेष्ठतम कार्य करना चाहिए । कार्य करना आपके हाथ में है और फल आपको प्राकृतिक विधान के अनुसार स्वयं मिलेगा । कर्म करता चल , फल की इच्छा मत कर ।

अपने कार्य को खुशनुमा बनाने का प्रयास करना चाहिए । उचित कार्य हमें असीम प्रसन्नता प्रदान करता है । क्योंकि प्रसन्नता श्रम के एवज में मिलने वाले धन अथवा सामग्री रूपी सम्पत्ति से नहीं खरीदी जा सकती । कोई भी सरकार प्रसन्नता को विधान

द्वारा प्रस्तुत नहीं कर सकती । कोई भी संगठन प्रसन्नता को श्रेष्ठ कार्य के लिए दिए जाने वाले बोनस के रूप में नहीं बांट सकता । प्रसन्नता या खुशी अर्न्तमन की चीज है । मन की प्रसन्नता हमारे अंदर की चीज है, उसे बाहरी संसार से नहीं पाया जा सकता । य ह एक पश्चिमी अवधारणा है कि अधिक संसाधन या अधिक धन का अर्थ है अधिक खुशी । अमेरिकन लोगों के उदाहरण हमारे सामने है , उन्होंने पर्यावरण, परिस्थिति विज्ञान की कीमत यहां तक कि व्यक्तिगत स्वास्थ्य, मन की शान्ति और पारिवारिक सामंजस्य की कीमत पर विज्ञान और प्राद्योगिकी में अभूतपूर्व प्रगति की है, परन्तु फिर भी वह अनजाने भय में जी रहा है । इस पृथ्वी पर वही व्यक्ति सबसे अधिक प्रसन्न है जिसकी अभिलाषाएं सीमित हैं ।

गीता की एक अन्य श्रेष्ठ शिक्षा है सकारात्मक सोच । हमेशा सकारात्मक सोच के साथ कार्य करें । हमेशा कहिए मैं यह कर सकता हूँ । इसके अलावा यह हां हमेशा बिना किसी शर्त के होनी चाहिए । नहीं का अर्थ है, संघर्षमय जीवन और प्रत्येक व्यक्ति के विरुद्ध जंग । भगवान राम ने हनुमान से लंका में जाकर सीता जी के संबंध में पता लगाने के लिए कहा । उन्होंने न नहीं कहा । हनुमान जी ने कोई बहाना नहीं बनाया कि समुद्र पर कोई पुल नहीं है और वह समुद्र पार कर लंका तक कैसे जाएंगे । इसके बाद भी हनुमान जी ने भगवान राम को न नहीं कहा । जब उन्होंने रावण के विरुद्ध युद्ध

में लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने पर हनुमान जी से संजीवनी लाने को कहा था । अतः सदैव अपना कार्य सकारात्मक सोच और खुले दिमाग से कीजिए । हमें अपने सभी कार्य नेक रास्ते पर चलते हुए और सभी की भलाई को सोचते हुए सम्पन्न करने चाहिए, न कि स्वार्थी ध्येय को सामने रखकर ।

अगर हम व्यापार और वाणिज्य में लगे हैं तो हमारा लाभ उचित मात्रा में ही होना चाहिए । आपने अधिकांश घरों में शुभ लाभ लिखे हुए देखे होंगे । यह शताब्दियों पुरानी प्रथा है । इसका अर्थ है हमारा लाभ उचित मात्रा में होना चाहिए । इस लाभ को सही माध्यम से प्राप्त करना चाहिए न कि वर्जित तरीकों से । हमने अपने इतिहास और परम्पराओं से जिस बपौती को प्राप्त किया वह अनूठी है और शायद इसे हम अन्य किसी देश में नहीं पाएंगे । हमारा सर्वोच्च ध्येय मानव मूल्यों की रक्षा, व्यक्तिगत विकास , समाज का विकास होना चाहिए , न कि केवल लाभ पाना ।

दूसरों की गलतियों को नजरअंदाज करते हुए अपना काम कीजिए । उनके सकारात्मक योगदान पर ध्यान दीजिए । यह हमारा कर्तव्य है कि अपने कार्य करने के स्थान पर अपने सहयोगियों तथा घर में अपने बच्चों की कमियों को नजरअंदाज करते हुए अच्छी सलाह दें । इसके अलावा हमें उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए (11 (47)) । अगर हम अपने श्रमिकों

से अधिकतम कार्य करवाना चाहते हैं तो हमें हमारी इच्छानुसार कार्य करने के लिए उन पर जोर नहीं डालना चाहिए ।

कार्य पूरी एकाग्रता के साथ बिना किसी डर के करना चाहिए । जो भी काम आप कर रहे हैं, उसे पूर्ण रूप से कीजिए । अगर आप भोजन कर रहे हैं तो सारा ध्यान भोजन करने में केन्द्रित करें और अगर टेलिविजन देख रहे हैं तो सारा ध्यान टेलिविजन देखने में केन्द्रित करें । कार्य स्थान पर अपने कार्य को पूर्ण रूप से , पूरी एकाग्रता से , अपने ज्ञान के अनुसार श्रेष्ठता से और बिना किसी भय के पूरा कीजिए । आधुनिक प्रबंधकों को विभिन्न प्रकार के कार्य, विभिन्न अवसरों पर अत्यावश्यकता और आपातकाल में करने होते हैं । हमें अपनी पूरी अन्दरूनी शक्ति लगाकर कार्य करना चाहिए जिसमें बहुत शक्ति है । निर्विघ्न , निपुण और प्रभावशाली ढंग से कार्य करने के लिए यह बेहतर होगा कि प्रबंधक लिए जाने वाले कार्यों की सूची बनाएं , उनकी प्राथमिकता निर्धारित करें और समय प्रबंध पर विशेष जोर दें । एक समय पर केवल एक ही कार्य करें । बेहतर होगा कि अगर एक समय पर आपकी मेज पर केसल वही एक फाइल हो जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो ।

इसके अलावा , अगर आप कोई निर्णय नहीं ले पा रहे हैं तो उस निर्णय को कुछ समय के लिए स्थगित कर दें और उस कार्य को तभी करें जब आपने

अपनी आन्तरिक शक्ति को संचित कर लिया हो , इस तरह यह आपका अपना सही निर्णय होगा न कि किसी से उधार लिया हुआ निर्णय ।

प्रेरणा

एफ डब्ल्यू टेलर कहते हैं ” मनुष्य एक सामान्य दिन के वेतन पर कोई असाधारण कार्य नहीं करेगा । वित्तीय प्रोत्साहन देकर अधिकतम उत्पादन प्राप्त करना प्रबंध सम्बन्धी पश्चिमी अवधारणा है आधुनिक प्रबन्ध प्रणाली संसाधनों के न्यूनतम प्रयोग द्वारा और व्यक्तियों के अधिकतम प्रयासों से अधिकतम लाभ अर्जित करने की बात कहती है । व्यक्तिगत प्रयासों को धन रूपी प्रोत्साहन देकर खरीदा जाता है । वित्तीय संसाधन कुछ सीमा तक महत्वपूर्ण होते हैं, परन्तु अन्य भी कुछ चीजें हैं जो महत्वपूर्ण होती हैं । उदाहरणार्थ अच्छा वातावरण, अच्छा पास पड़ोस, कार्य करने के स्थान पर सौहार्दपूर्ण संबंध , व्यक्तिगत भावनाएं , कार्य संतुष्टि आदि ।

महात्मा गांधी ने युवाओं को प्रेरित किया और उन्होंने कर्मयोगी बनाया तथा वह बिना किसी प्रतिफल की इच्छा रखे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े । आज के युग में इस प्रकार की प्रेरणा की आवश्यकता है । अच्छे कार्य का अनुसरण श्रेष्ठतम रूप से करना चाहिए क्योंकि यह स्वाभाविक है । हमारे पास अनूठा, धैर्य और संवेदना है ।

हमें इन गुणों का आध्यात्मिक रूप से और विकास करना चाहिए । हमें प्रेरणा कहीं बाहर से नहीं मिलेगी , यह हमारे अन्तर्मन से उठेगी । जैसे कि किसी भी संगठन में सोमवार अथवा अन्य किसी दिन के मुकाबले शुक्रवार शाम को लोग बहुत उत्साहित नजर आते हैं । यह इसलिए क्योंकि शनिवार और रविवार की छुट्टी होती है । छुट्टी वाले दिन हम अधिक धन व्यय करते हैं, परन्तु फिर भी हम बहुत प्रसन्न नजर आते हैं । इस प्रेरणा का मूल आधार यह होता है कि हमारा दिल घर में लगा होता है ।

भगवान कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध की नई नीतियों या नई तकनीकों से प्रेरित नहीं किया । उन्होंने केवल व्यवहार, दर्शन और आत्मिक अनुभव में परिवर्तन किया था । भगवान कृष्ण ने उन्हें अभिव्यक्ति के नए तरीकों के संबंध में व्याख्या दी । भगवान कहते हैं - बुद्धिमान व्यक्ति कभी भी किसी चुनौतीपूर्ण स्थिति में दुखी नहीं होते हैं और न ही बैठकर रोते चिल्लाते हैं । वह चुनौतियों से डरकर कभी भागते नहीं हैं । यह एक विफलता तो हो सकती है परन्तु इसे पूर्ण असफलता नहीं कहा जा सकता । वह मुस्कुराते हुए परिस्थितियों का सामना करते हैं । इस प्रकार कृष्ण मुस्कुराते हुए अर्जुन को प्रेरित करते हैं ।

अतः आधुनिक मैनेजर को व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा ताकि वह अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर सके । वह सुस्त नहीं है तथा

कुछ करना चाहता है क्योंकि यही उसके जीने का तरीका है । ऐसा करने से वह परिवार के लिए भोजन तो जुटाता ही है, उसे समाज में मान सम्मान भी मिलता है तथा वह कर्म करते हुए आनंदित भी होता है । हमें उसे उसके महान होने का अहसास दिलाते हुए उसे उचित स्थान नियुक्त करना है । इससे अधिकतम की प्राप्ति के साथ साथ खुशी भी हासिल होगी ।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हमें संस्थान में कार्यरत सभी व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त करना होगा । किसी एक को भी संस्था की वर्कशीट से परे छोड़ा नहीं जा सकता । सभी समान नहीं होते हैं । यह प्रकृति का नियम है । हो सकता है कि कुछ लोग संस्था के लिए अधिक योगदान कर सकते हैं तो कुछ कम । परन्तु हमें सभी को साथ लेते हुए उनके द्वारा किए गए अच्छे कार्यों का क्रेडिट भी उन्हें देना होगा । तुलना मत करो क्योंकि दो व्यक्ति एक समान नहीं हो सकते तथा दो व्यक्तियों की तुलना करते हुए हम निश्चित रूप से स्वयं ही समस्याओं को निमंत्रण देते हैं। संस्था की उपलब्धि सभी की उपलब्धि है । इस उपलब्धि में सभी की विजय है । तुम्हें केवल सही समय में सही व्यक्ति को सही स्थान पर लगाना है ।

उसे अभिप्ररित करने का अन्य तरीका उसके आत्म सम्मान को जगाना है जो धर्म और प्रसिद्धि के माध्यम से संभव है । इस प्रकार जीवन एवं उद्देश्यों

के प्रति उसके रवैये को बदलते हुए उसे अभिप्रेरित किया जा सकता है न कि केवल पैसे और सांसारिक सुख के माध्यम से ।

प्रशिक्षण

बाधाओं के बिना संस्था के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कर्मचारियों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण बहुत जरूरी है । आज तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं तथा अनेक व्यक्तियों एवं संस्थाओं को शामिल करने से संस्था की गतिविधियां काफी जटिल हो गयी है। । इसके अतिरिक्त संस्था में काम करने वाले कर्मचारी अलग अलग धर्म, भाषा, संस्कृति एवं समाज के होते हैं अतः उनके लिए प्रबन्ध के विभिन्न पहलुओं का समुचित ज्ञान एवं निरंतर प्रशिक्षण अनिवार्य हो जाता है ताकि वे एक साथ इकट्ठे होकर अनुकूल रूप से कार्य कर सकें ।

मान्यताएं एवं व्यवसाय नीतियां

- प्रशिक्षण का अभिन्न अंग होनी चाहिए । मान्यताएं ऐसी जीवन शैली तथा ऐसी मानसिक अवस्था है जिसमें आप मैत्रीभाव से रहते हुए कर्म कर सकते हैं , झगड़ों से बचते हुए एकता को आगे बढ़ा सकते हैं । मान्यताएं एवं व्यवसाय नीतियां अखंडता के उच्च स्तर को लाती हैं । नैतिक एवं सामाजिक जागरूकता को पैदा करती है । अतः परिवार एवं संस्था के प्रति सामाजिक दायित्व को महसूस करना चाहिए । कर्मचारियों को क्रोध, क्षुद्रता, लोभ एवं

लालच जैसी नकारात्मक मान्यताओं में लिप्त न होने की सीख भी दी जानी चाहिए ।

हाल ही में हार्वार्ड बिजनेस स्कूल ने प्रबन्ध विषय के विद्यार्थियों को व्यवसाय नीतियां एवं मान्यताएं पढ़ाने के लिए 30 मिलियन अमरीकी डालर खर्च किए हैं । भारत सरकार की अखिल भारतीय तकनीकी परिषद जो देश में तकनीकी शिक्षा के समन्वय के लिए उत्तरदायी है ने प्रबन्ध अध्ययन की पाठ्यचर्या में व्यवसाय नीतियों को शामिल करने की सिफारिश की है । आज लोग काम करते हुए व्यक्तिगत विकास एवं आध्यात्मिकता के बारे में बात करते हैं ।

मारुति कार कंपनी ने अपने कर्मचारियों के लिए आर्ट आफ लिविंग पाठ्यक्रम शुरू किए हैं ।इफको एवं एजसीएचएफ भी अपने स्टाफ के लिए स्वयं प्रबंधन एवं योगा पर कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं ताकि उनकी जीवनशैली को सुधारा जा सके । आइचर एक कारपोरेट संस्था जो अभिप्रेरणात्मक कार्यशक्ति के लिए पहचानी जाती है, इसके एचआरडी मैनेजर का कहना है कि हमारी कंपनी में हर व्यक्ति पर ध्यान दिया जाता है तथा इससे अधिकतम लाभ की प्राप्ति होती है ।

स्वयं प्रबंधन

आधुनिक प्रबंधन पर लिखी कोई भी पुस्तक स्वयं प्रबंधन का उल्लेख नहीं करती जबकि स्वयं प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है तथा आज जब हम एक अंधी

दौड़ में शामिल हैं तो यह बहुत सार्थक एवं आवश्यक हो जाता है । प्रत्येक कार्य किसी व्यक्ति विशेष द्वारा किया जाता है । अतः जब वह व्यक्ति सही मानसिक अवस्था में होगा तो वह अच्छा काम भी करेगा । वह समुदाय के बेहतर हितों के लिए ही कर्म करेगा । ऐसा व्यक्ति जो अपनी सोच, विचारों एवं कार्यकलापों का स्वामी है, उसका मस्तिष्क संतुलित होता है तथा ऐसा व्यक्ति जो दूसरों का ध्यान रखता है उसे स्वयं का समुचित रूप से प्रबंधन करने वाला कहा जा सकता है ।

संसार कोलाहल से परिपूर्ण है क्योंकि वह लाखों शोरगुल वाले लोगों के मस्तिष्क से बना है । मानव मस्तिष्क एक युद्ध क्षेत्र है तथा हमेशा सन्देही और चकित भी रहता है । यह हवा एवं आवाज से कहीं अधिक तेज है तथा माइर्न कम्प्यूटर से कहीं अधिक पेचीदा है । अपने मस्तिष्क को कुछ आराम देने की कोशिश करें जैसाकि हम अपने शरीर को देते हैं । अतः कम से कम दिन में कुछ पलों के लिए स्वयं को शून्य अवस्था में महसूस करें । दिमाग को आराम देना दिमाग को भोजन देने के समान है । अपने दिमाग का तभी इस्तेमाल करें जब इसकी जरूरत है अन्यथा इसे शान्त रखें । इससे हमारी गतिविधियों को ऊर्जा एवं ताकत मिलेगी तथा कार्य निष्पादन में भी कुशलता आएगी । इससे हमारा मस्तिष्क कुशल होगा ।

मस्तिष्क की समचित्तता

गीता के अनुसार मनुष्य को जीवन की विभिन्न विपरीत परिस्थितियों यथा प्रतिष्ठा एवं बदनामी, लाभ एवं हानि, खुशी एवं दुःख, सफलता एवं असफलता में अपना दिमागी संतुलन बनाए रखना चाहिए (2 (38)) । जैसाकि हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं कि हम तेजी से बदलते हुए संसार में रह रहे हैं । इस परिवर्तन में हम अनेकों उथल पुथल एवं चुनौतियों का सामना करते हैं । अतः किसी भी खुशखबरी पर आवश्यकता से अधिक खुश एवं बुरी खबर पर आवश्यकता से अधिक दुःखी नहीं होना चाहिए । हमें तो केवल अपना मानसिक संतुलन बनाए रखना है । दूसरी ओर हमें चुपचाप शांत दिमाग से सौंपे गए कर्तव्यों का निर्वाह करना चाहिए । कभी भी समाधान बाहर से मत ढूँढें । समाधान अंदर से ढूँढने की चेष्टा करो । आपको पता चलेगा कि अंदरूनी ज्ञान से लिए गए आपे निर्णय सही, अच्छे एवं सृजनात्मक हैं ।

स्वयं अपने आप से मिलें तथा भीतरी हलचल को रोकत हुए कुछ पलों के लिए मौन रहें । इससे आपको काफी शक्ति एवं सृजनात्मक शांति मिलेगी । यह मौन आपको आपके ज्यादा नजदीक लाएगा । मौन शांति है, मुस्कान है । आज हम मुस्कुराना भूल गए हैं । आप लोगों को विशेषकर मैनेजर्स को मुस्कुराते हुए शायद ही देश पाते हैं । आज हास्य क्लबों की स्थापना की जा रही है ताकि लोगों को हंसाया जा सके । इस दिखावटी हंसी

की जरूरत नहीं है परन्तु प्राकृतिक हंसी जो अंदर से आती है, की अत्यन्त आवश्यकता है ।

आप अपने स्वयं के सच्चे मित्र हैं तो सबसे बुरे दुश्मन भी । आप ही अपने लिए समस्याओं को पैदा करते हैं । उदाहरणार्थ अहम् । यह आपकी अपनी उपज है । अहम् हमेशा कुछ कगत ही कराता है । क्योंकि यह यथार्थ एवं वर्तमान से परे होता है । हम अपनी कल्पनाओं , स्मृति, इच्छा, एवं जलन भावना से अपने लिए मुश्किलें खड़ी करते रहते हैं। इस अहम को छोड़ने से आप अपनी असंख्य समस्याओं से स्वयं ही छुटकारा पा लेंगे ।

प्रतिदिन चिन्तन एवं योगा करें ऐसा करने से आप स्वयं की अनुभूति अनुभव करेंगे । यह जादू है, इससे सब कुछ अच्छा ही होगा ।

विवाद का समाधान

भारत के विभिन्न न्यायालयों में चार करोड़ मामले लंबित पड़े हैं । औसतन झगड़ों के निपटान में 20 वर्ष लगते हैं । लगभग 280000 कैदी ऐसे हैं जो जेलों में ओदशात्मक निर्णयों के लिए लम्बा इंतजार कर रहे हैं । इस समस्या की जटिलता के मद्देनजर भारत सरकार कानूनी समाधान के लिए समानांतर तकनीक के सृजन पर विचार कर रही है ताकि न्यायालय में बढ़ते हुए दबाव को कम किया जा सके ।

विवाद, कुंठा, क्रोध, नाराजगी एवं दुःखद परिणामों को जन्म देता है । संसाधनों को नष्ट करता है । ये झगड़े हमारा बेशकीमती समय, पैसे एवं मानव शरीर की क्षमताओं को खा जाते हैं तथा दोनों ही पार्टियों की सुख , समृद्धि एवं शान्ति को भंग करते हैं ।

विवाद दोनों ही पार्टियों को कमजोर बनाते हैं । यदि हम इन झगड़ों को सकारात्मक दृष्टिकोण से अपनाते हैं तो इनसे हमें अधिक ज्ञान एवं समझ की प्राप्ति होती है । हमें लाभ हानि, मित्र शत्रु, प्रसिद्धि गुमनामी से परे हटकर झगड़ों की मूल जड़ तक जाना होगा । समाज कल्याण को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए । हमें अपनी शक्ति का प्रयोग अच्छे के लिए करना चाहिए नकि दूसरों की बुराइयों के लिए । सकारात्मक रवैये एवं ताकत से झगड़ों का प्रभावी समाधान हो जाता है हालांकि झगड़े हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं तथा झगड़ों का समाधान घर अथवा स्कूल में पढ़ाया नहीं जाता तथापि हमें झगड़ों के समाधान की कला को सीखना होगा क्योंकि झगड़ों के लिए हम नहीं बने हैं । एक चीनी कहावत के अनुसार ऐसे व्यक्ति जो जीवन के झगड़ों से निपटने के लिए उत्तरदायी होते हैं, सही मायनों में कर्मचारियों का नेतृत्व कर सकते हैं ।

निष्कर्ष

यदि हम कर्म करते हुए अथवा कर्म से दूर होकर भी संतुष्ट एवं प्रसन्न रहना चाहते हैं तथा परिवार एवं

सभ्य समाज में सद्भावना , मेल मिलाप चाहते हैं तो हमें संतुलन , आराम , एवं चिन्तन मनन नामक तीन शब्दों को हमेशा याद रखना चाहिए ।

आप जो कुछ भी करें वह संयम में होना चाहिए । जीवन में आपके लक्ष्य यथोचित होने चाहिए, आपका कार्य आपकी क्षमता से हटकर नहीं होना चाहिए । आपका खाना पीना संयमित होना चाहिए । आपका तनाव क्रोध , लालच इत्यादि भी संयमित होना चाहिए ताकि यह आपके स्वास्थ्य को प्रभावित न कर सके । स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम के लिए कुछ समय निकालो । स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति ही सेनापति होते हैं । तुम पैसे से स्वास्थ्य एवं खुशी नहीं खरीद सकते ।

आराम दूसरा महत्वपूर्ण शब्द है । किसी भी दबाव में न आकर आरामदायक मुद्रा में खाना , चलना, काम करना सीखो । परन्तु इसका तात्पर्य सुस्ती से कदापि नहीं है । जीवन में कुछ भी करते हुए सतर्क एवं चैतन्य रहो परन्तु आरामदायक मुद्रा में , किसी भय के अंतर्गत नहीं । भय आपका सबसे बड़ा दुश्मन है तथा जीवन में अनेकों बुराइयों को जन्म देता है ।

तीसरा महत्वपूर्ण शब्द है ध्यान (चिन्तन / मनन) । दिन में कुछ समय ध्यान के लिए निकालो । यह आपके शरीर और दिमाग को वांछित भोजन देगा तथा आप प्रसन्नचित महसूस करेंगे । यह आपके दिमाग को

स्फूर्ति देगा तथा आप और भी क्षमता से काम कर सकेंगे
। आपकी समझदारी बढ़ने लगेगी । आप अपने हर कार्य
से तथा अपने आप से औश्र इस संसार से प्रेम कर
सकेंगे जो बहुत खूबसूरत और अनमोल है ।

